03-02-2002 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ, सर्व खज़ानों में सम्पन्न बनो

आज सर्व खज़ानों के मालिक अपने खज़ानों से सम्पन्न बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा सर्व खज़ानों से सम्पन्न है। जो सम्पन्न होता है उनकी निशानी सदा प्राप्ति स्वरूप, तृप्त आत्मा दिखाई देगी। सदा खुश नज़र आयेगी क्योंकि भरपूर है। तो हर एक अपने से पूछे कि हमारे पास कितने खज़ाने जमा हैं? यह अविनाशी खज़ाने अब भी प्राप्त हैं और भविष्य में अनेक जन्म साथ रहेंगे। यह खज़ाने खत्म नहीं होने वाले हैं। सबसे पहला खज़ाना है - ज्ञान का खज़ाना, जिस ज्ञान के खज़ाने से इस समय भी आप सभी मुक्ति और जीवनमुक्ति का अनुभव कर रहे हो। जीवन में रहते, पुरानी दुनिया में रहते, तमोगुणी वायुमण्डल में रहते ज्ञान के खज़ाने के आधार से इन सब वायुमण्डल, वायब्रेशन से न्यारे मुक्त हो, कमल पुष्प समान न्यारे मुक्त आत्मायें दु:ख से, चिंताओं से, अशान्ति से मुक्त हो। जीवन में रहते बुराइयों के बन्धनों से मुक्त हो। व्यर्थ संकल्पों के तूफान से मुक्त हो। हैं मुक्त? सभी हाथ हिला रहे हैं।

तो मुक्ति और जीवनमुक्ति इस ज्ञान के खज़ाने का फल है, प्राप्ति है। चाहे व्यर्थ संकल्प आने की कोशिश करते हैं, निगेटिव भी आते हैं लेकिन ज्ञान अर्थात् समझ है कि व्यर्थ संकल्प वा निगेटिव का काम है आना और आप ज्ञानी तू आत्माओं का काम है इनसे मुक्त, न्यारे और बाप के प्यारे रहना। तो चेक करो - ज्ञान का खज़ाना प्राप्त है? भरपूर है? सम्पन्न है या कम है? अगर कम है तो उसको जमा करो, खाली नहीं रहना।

ऐसे ही योग का खज़ाना - जिससे सर्व शक्तियों की प्राप्ति होती है। तो अपने को देखो योग के खज़ाने द्वारा सर्व शक्तियां जमा हैं? सर्व? एक भी शक्ति अगर कम होगी तो समय पर धोखा दे देगी। आप सबका टाइटल – मास्टर सर्वशक्तिवान है, शक्तिवान नहीं, सर्वशक्तिवान। तो सर्व शक्तियों का खज़ाना योगबल द्वारा जमा है? भरपूर है, प्राप्ति स्वरूप है वा कमी है? क्यों? अभी अपनी कमी को भर सकते हो। अभी चांस है। फिर सम्पन्न करने का समय समाप्त हो जायेगा तो कमी रह जायेगी। चेक करो - एक- एक शक्ति को सामने लाओ और सारे दिन की दिनचर्या में चेक करो - अगर परसेन्टेज़ भी कम है तो फुल पास नहीं कहेंगे क्योंकि आप सबका लक्ष्य है, किसी भी बच्चे से पूछते हैं कि फुल पास होना है या हाफ पास? तो सभी कहते हैं कि हम तो सूर्यवंशी बनेंगे, चन्द्रवंशी नहीं बनेंगे। चन्द्रवंशी बनेंगे? बापदादा बहुत अच्छा तख्त देंगे, बनेंगे चन्द्रवंशी? इण्डिया वाले सूर्यवंशी बन जाएं, फारेन

वाले चन्द्रवंशी बन जाएं, बनेंगे? नहीं बनेंगे? सूर्यवंशी बनना है? बनना ही है। यह तो बापदादा चिटचैट कर रहे हैं। जब सूर्यवंशी बनना ही है, दृढ़ निश्चय है, बाप से और स्वयं से प्रतिज्ञा कर ली है तो अब से किसी भी शक्ति की परसेन्टेज़ कम नहीं हो। अगर कहेंगे सरकमस्टांश अनुसार, समस्याओं अनुसार परसेन्टेज़ कम रह गई तो 14 कला बन जायेंगे। इसलिए आजकल बापदादा चारों ओर के सभी बच्चों का पोतामेल, रजिस्टर चेक कर रहा है। बापदादा के पास भी हर एक का रजिस्टर है क्योंकि समय के अनुसार पहले ही बापदादा बच्चों को सुना रहे हैं कि समय की रफ्तार अनुसार अभी कब नहीं कहो, अब। कब हो जायेगा, कर लेंगे....होना तो है ही.. यह नहीं सोचो। होना तो है नहीं, अभी-अभी करना ही है। समय की रफ्तार तीव्र हो रही है इसलिए जो लक्ष्य रखा है बाप समान बनने का, फुल पास होने का, 16 कला सम्पन्न बनने का, तो बापदादा भी यही चाहते हैं कि लक्ष्य और प्रैक्टिकल में लक्षण समान हों। जब लक्ष्य और लक्षण दोनों समान होंगे तब ही बाप समान सहज बन जायेंगे। तो चेक करो - हो जायेगा, बन ही जायेंगे...यह अलबेलापन है। जो करना है, जो बनना है, जो लक्ष्य है, वह अभी से ही करना है, बनना है। कभी शब्द नहीं लगाओ, अभी-अभी।

तो ज्ञान का खज़ाना, योग का खज़ाना और भी धारणाओं का खज़ाना है। जिससे (धारणाओं से) गुणों का खज़ाना जमा हो जाता है। गुणों में भी जैसे सर्व शक्तियां हैं, ऐसे ही सर्वगुण हैं, सिर्फ गुण नहीं हैं, सर्वगुण हैं। तो सर्व गुण हैं या सोचते हो एक दो गुण कम हुआ, तो क्या हुआ, चलेगा? नहीं चलेगा। तो सर्व गुणों का खज़ाना जमा है? कौन से गुण की कमी है उसको चेक करके भरपूर हो जाओ।

चौथी बात है - सेवा। सेवा द्वारा सभी को अनुभव है, जब भी मनसा सेवा या वाणी द्वारा वा कर्म द्वारा भी सेवा करते हो तो उसकी प्राप्ति आत्मिक खुशी मिलती है। तो चेक करो सेवा द्वारा खुशी की अनुभूति कहाँ तक की है? अगर सेवा की और खुशी नहीं हुई, तो वह सेवा यथार्थ सेवा नहीं है। सेवा में कोई न कोई कमी है, इसलिए खुशी नहीं मिलती। सेवा का अर्थ है आत्मा अपने को खुशनुम:, खिला हुआ रूहानी गुलाब, खुशी के झूले में झूलने वाला अनुभव करेगी। तो चेक करो - सारा दिन सेवा की लेकिन सारे दिन की सेवा की तुलना में इतनी खुशी हुई या सोच-विचार ही चलते रहे, यह नहीं ये, यह नहीं ये...? और आपकी खुशी का प्रभाव एक तो सेवा स्थान पर, दूसरा सेवा साथियों पर, तीसरा जिन आत्माओं की सेवा की उन आत्माओं पर पड़े, वायुमण्डल भी खुश हो जाए। यह है सेवा का खज़ाना खुशी।

और बात - चार सबजेक्ट तो आ ही गई। और है सम्बन्ध-सम्पर्क, वह भी बहुत ज़रूरी है, क्यों? कई बच्चे समझते हैं बापदादा से तो सम्बन्ध है ही। परिवार में हुआ नहीं हुआ, क्या बात है, (क्या हर्जा है) बीज से तो है ही। लेकिन

आपको विश्व का राज्य करना है ना! तो राज्य में सम्बन्ध में आना ही होगा। इसलिए सम्बन्ध-सम्पर्क में आना ही है लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में यथार्थ खज़ाना मिलता है दुआयें। बिना सम्बन्ध-सम्पर्क के आपके पास दुआओं का खज़ाना जमा नहीं होगा। माँ बाप की दुआयें तो हैं, लेकिन सम्बन्ध-सम्पर्क में भी दुआयें लेनी हैं। अगर दुआयें नहीं मिलती, फीलिंग सर्व खज़ानों से सम्पन्न आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते नहीं आती तो समझो सम्बन्ध-सम्पर्क में कोई कमी है। यथार्थ रीत अगर सम्बन्ध-सम्पर्क है तो दुआओं की अनुभूति होनी चाहिए। और दुआओं की अनुभूति क्या होगी? अनुभवी तो हो ना! अगर सेवा से दुआयें मिलती हैं तो दुआयें मिलने का अनुभव यही होगा जो स्वयं भी सम्बन्ध में आते, कार्य करते डबल लाइट (हल्का) होगा, बोझ नहीं महसूस करेगा और जिनकी सेवा की, सम्बन्ध-सम्पर्क में आये वह भी डबल लाइट फील करेगा। अनुभव करेगा कि यह सम्बन्ध में सदा हल्का अर्थात् इज़ी है, भारी नहीं रहेगा। सम्बन्ध में आऊं, नहीं आऊं... लेकिन दुआयें मिलने के कारण दोनों तरफ नियम प्रमाण, ऐसा इज़ी भी नहीं - जैसे कहावत है, ज्यादा मीठे पर चींटियाँ बहुत आती हैं। तो इतना इज़ी भी नहीं, लेकिन डबल लाइट रहेगा। तो बापदादा कहते हैं - अपने खज़ाने चेक करो। समय दे रहे हैं। अभी समाप्ति का बोर्ड नहीं लगा है। इसलिए चेक करो और बढ़ते चलो।

बापदादा का बच्चों से प्यार है ना! तो बापदादा समझते हैं कोई भी बच्चा पीछे नहीं रह जाए। हर एक बच्चा आगे से आगे जाए। चलते-चलते देह- अभिमान आ जाता है। स्वमान और देह-अभिमान। देह-अभिमान का कारण है स्वमान में कमी हो जाती है। तो देह-अभिमान को मिटाने का बहुत सहज साधन है - देह-अभिमान आने का एक ही अक्षर है, एक ही शब्द है, वह जानते भी हो। देह-अभिमान का एक शब्द कौन-सा है? (मैं) अच्छा तो कितना बारी मैं-मैं कहते हो? सारे दिन में कितने बारी ''मैं'' बोलते हो, कभी नोट किया है? अच्छा एक दिन नोट करना। बार-बार मैं शब्द तो आता ही है। लेकिन मैं कौन? पहला पाठ है, मैं कौन? जब देह-अभिमान में मैं कहते हो, लेकिन वास्तव में मैं हूँ कौन? आत्मा या देह? आत्मा ने देह धारण की, या देह ने आत्मा धारण की? क्या हुआ? आत्मा ने देह धारण की। ठीक है ना? तो आत्मा ने देह धारण की, तो मैं कौन? आत्मा ना! तो सहज साधन है, जब भी मैं शब्द बोलो, तो यह याद करो कि मैं कौन-सी आत्मा हूँ? आत्मा निराकार है, देह साकार है। निराकार आत्मा ने साकार देह धारण की, तो जितना बारी भी मैं-मैं शब्द बोलते हो, उतना समय यह याद करो कि मैं निराकार आत्मा साकार में प्रवेश किया है। जब निराकार स्थिति याद होगी तो निरंहकारी स्वत: हो जायेंगे। देह-भान खत्म हो जायेगा। वही पहला पाठ मैं कौन? यह स्मृति में रख करके मैं कौन-सी आत्मा हूँ, आत्मा याद आने से निराकारी स्थिति पक्की हो जायेगी। जहाँ निराकारी स्थिति होगी वहाँ निरहंकारी, निर्विकारी हो ही जायेंगे। तो कल से नोट करना - जब मैं शब्द कहते हो तो क्या याद आता है? और जितना बारी मैं शब्द यूज़ करो उतना बारी

निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्वत: हो जायेंगे।

अच्छा - आज यूथ ग्रुप आया है। यूथ बहुत हैं। बापदादा यूथ ग्रुप को वरदान देते हैं कि सदा आबाद रहना। एक भी खज़ाना बरबाद नहीं करना, आबाद रहना, आबाद करना। लौकिक गुरू लोग आशीर्वाद देते हैं आयुश्वान भव और बापदादा कहते हैं शरीर की आयु तो जितनी है उतनी रहेगी इसीलिए शरीर की आयु के हिसाब से आयुश्वान भव का वरदान नहीं देते हैं लेकिन इस ब्राह्मण जीवन में सदा आयुश्वान भव। क्यों? ब्राह्मण सो देवता बनेंगे। तो आयुश्वान तो होंगे ना! यूथ की एक विशेषता होती है। आप यूथ अपनी विशेषता को जानते हो? क्या विशेषता होती है, जानते हो? क्या विशेषता है आपमें? (जो चाहे वह कर सकते हैं) अच्छा - कर सकते हो? अच्छी बात है, दुनिया के हिसाब से कहते हैं, यूथ जिद्दी बहुत होते हैं, जो सोचेंगे वह करके दिखायेंगे। वह लोग उल्टा कहते हैं लेकिन यहाँ ब्राह्मण यूथ जिद्दी नहीं हैं लेकिन अपनी प्रतिज्ञा पर पक्के रहने वाले हैं। हटने वाले नहीं हैं। ऐसे हो यूथ? हाथ उठाना तो बहुत सहज है। बापदादा खुश है हाथ उठाना, यह भी हिम्मत है ना। लेकिन रोज़ अमृतवेले बाप से की हुई प्रतिज्ञा कि हम इस ब्राह्मण जीवन की प्राप्ति से, सेवा से कभी भी संकल्प में भी हटेंगे नहीं। इस हिम्मत को, प्रतिज्ञा को रोज़ दोहराओ और बार-बार चेक करो कि हिम्मत जो रखी, संकल्प किया वह प्रैक्टिकल में हो रहा है?

गवर्मेन्ट तो कहती है, बस दो चार लाख बन जाएं तो भी ठीक है। आप कौन हो! ब्राह्मण हो ना! कहते हैं - यह ब्राह्मण यूथ एक-एक लाख के समान हैं। इतने मजबूत हैं? देखो, ऐसे नहीं घर जाकर फिर लिख दो बाबा माया आ गई, संस्कार आ गया, समस्या आ गई। समस्याओं के समाधान स्वरूप बनो। समस्यायें तो आयेंगी लेकिन अपने से पूछो मैं कौन? समाधान स्वरूप हूँ या समस्या से हार खाने वाला हूँ? आप सबका टाइटल क्या है - विजयी रत्न या हार खाने वाले रत्न? विजयी रत्न हैं। ब्राह्मण जन्म होते ही बापदादा ने हर ब्राह्मण के मस्तक में विजय का तिलक अमर लगा दिया। तो अमरभव के वरदानी हो। अभी यह अपने से वायदा करो, ऐसे तो वायदा कहलायेंगे तो सब कर लेंगे लेकिन अपने मन में अपने से वायदा करो - कभी भी संस्कार के वश नहीं होंगे जो बाप के संस्कार वह मुझ ब्राह्मण आत्मा के संस्कार। जो द्वापर, कलियुग के संस्कार हैं वह मेरे संस्कार नहीं क्योंकि बाप के संस्कार नहीं हैं। यह तमोगुणी संस्कार ब्राह्मणों के संस्कार हैं? नहीं है ना! तो आप कौन हो? ब्राह्मण हो ना!

बापदादा को भी यूथ ग्रुप पर नाज़ है। देखो, दादियों को भी यूथ पर नाज़ है। दादी को प्यार है ना यूथ से। एकस्ट्रा प्यार है। कुमार हैं सुकुमार। कुमार नहीं, सुकुमार हैं। एक-एक कुमार विश्व के कुमारों का परिवर्तन कर दिखाने वाले। अच्छा, कुमारों को काम दें? हिम्मत है? करना पड़ेगा। कुमारियां करेंगी?

तो काम दे रहे हैं ध्यान से सुनना। तो जो अगली सीज़न होगी, अगली सीजन में कुमारों का ऐसे ही स्पेशल प्रोग्राम

रखेंगे लेकिन.... लेकिन भी है। ज्यादा काम नहीं देते हैं एक-एक कुमार 10-10 कुमारों का, छोटा-सा हाथ का कंगन तैयार करके लाना। हाथ में कंगन पड़ता है ना। ब्रह्मा बाप को सदैव हाथ में फूलों का कंगन डालते हैं। तो एक-एक कुमार, कच्चे-कच्चे नहीं लाना, पक्के-पक्के लाना। तो मधुबन में तो आयें फिर घर जायें तो बदल जाएं! नहीं। ऐसे पक्के बनाकर लाना जो बापदादा देख-देख कहे वाह कुमार वाह! ऐसे तैयार हैं? करेंगे, ऐसे? थोड़ा सोचो। ऐसे ही हाथ नहीं उठा लो। करना पड़ेगा। बनाना पड़ेगा। डबल फारेनर्स भी करेंगे? डबल फारेनर्स में कुमार हाथ उठाओ। तो आप भी 10 लायेंगे ना? फारेनर्स भी लायेंगे, 61 इण्डिया वाले भी लायेंगे। फिर जो फर्स्टक्लास क्वालिटी लायेंगे उसको इनाम देंगे। इनाम बढ़िया देंगे, घटिया नहीं देंगे। प्यार है ना कुमारों से। अगर गवर्मेन्ट को ज्यादा में ज्यादा कुमार पॉजिटिव कर्म करने वाले मिल जाएं तो गवर्मेन्ट कितना खुश होगी। अगर आप 10-10 कुमार लायेंगे तो सारा हाल कुमारों से भरेंगे फिर गवर्मेन्ट को बुलायेंगे, देखो यह कुमार। लेकिन लाने पड़ेंगे, बनाने पड़ेंगे। अगर अपनी स्थिति, लक्ष्य और लक्षण को समान रखेंगे तो सेवा में सफलता होगी या नहीं होगी - यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। हुई पड़ी है। सिर्फ आपको निमित्त बनना पड़ेगा। यह प्रतिज्ञा सदा रिवाइज करते रहना। कमाल तो करनी ही है। अच्छा।

डबल विदेशी भी आये हैं। बापदादा कहते हैं कि डबल विदेशियों ने बापदादा का एक टाइटल प्रैक्टिकल में प्रत्यक्ष किया है, वह कौन-सा? (विश्व-कल्याणकारी) पहले जब स्थापना हुई तो भारत कल्याणकारी बने लेकिन जब से डबल फारेनर्स ब्राह्मण आत्मायें बने तो बाप का विश्वकल् याणकारी टाइटल प्रैक्टिकल में प्रत्यक्ष हुआ। इसलिए बापदादा को डबल फारेनर्स के ऊपर भी विशेष नाज़ है। बापदादा ने देखा है कि डबल फारेनर्स को एक सेवा की धुन लगी हुई है, कोई भी कोना रह नहीं जाए।

(मुरली के बीच अचानक बापदादा के सामने दो कुमार स्टेज पर आ गये, जिन्हें हटाया गया)

अच्छा। अभी खेल में खेल देखा। अभी बापदादा कहते हैं साक्षी होकर खेल देखा, इन्जाय किया, अभी एक सेकण्ड में एकदम देह से न्यारे पावरफुल आत्मिक रूप में स्थित हो सकते हो? फुलस्टाप।

(बापदादा ने बहुत पावरफुल ड्रिल कराई)

अच्छा - यही अभ्यास हर समय बीच-बीच में करना चाहिए। अभी- अभी कार्य में आये, अभी-अभी कार्य से न्यारे, साकारी सो निराकारी स्थिति में स्थित हो जाएं। ऐसे ही यह भी एक अनुभव देखा, कोई समस्या भी आती है तो ऐसे ही एक सेकण्ड में साक्षी दृष्टा बन, समस्या को एक साइडसीन समझ, तूफान को एक तोहफा समझ उसको

पार करो। अभ्यास है ना? आगे चलकर तो ऐसे अभ्यास की बहुत आवश्यकता पड़ेगी। फुलस्टाप। क्वेश्चन मार्क नहीं, यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ? हो गया। फुलस्टाप और अपने फुल शक्तिशाली स्टेज पर स्थित हो जाओ। समस्या नीचे रह जायेगी, आप ऊंची स्टेज से समस्या को साइडसीन देखते रहेंगे। अच्छा।

जो दूर से दूर बैठे देख रहे हैं, चाहे भारत में चाहे फारेन में सुन भी रहे हैं, देख भी रहे हैं, उन सभी दूर बैठे दिल के समीप बच्चों को बापदादा पहले याद-प्यार दे रहे हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं कोई का क्या टाइम होता है, कोई का क्या टाइम होता है, फिर भी रात को दिन बनाके, दिन को रात बनाकर बैठ रहे हैं। यह है बच्चों और बाप का प्यार और बीच में बापदादा विज्ञानी बच्चों को भी मुबारक देते हैं कि आप बच्चों के लिए यह साइंस के साधन निकाले हैं। इसीलिए उन बच्चों को भी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। आपके लिए ही यह साधन 100 वर्ष के अन्दर-अन्दर निकले हैं। तो कमाल है ना साइंस वालों की, थैंक्स है ना! अच्छा।

चारों ओर के सर्व खज़ानों से सम्पन्न आत्माओं को, सदा हर समय प्राप्तियों से भरपूर, मुस्कराते हुए हर्षित रहने वाली आत्माओं को, सदा बाप से की हुई प्रतिज्ञा को जीवन में प्रत्यक्ष करने वाले ज्ञानी तू आत्मायें, योगी तू आत्मायें बच्चों को, सदा लक्ष्य और लक्षण को समान करने वाले बाप समान आत्माओं को, सदा हर समय सर्व खज़ानों का स्टॉक और स्टॉप लगाने वाले तीव्र पुरुषार्थी श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार, दिलाराम का दिल से याद-प्यार और नमस्ते।

ईस्टर्न, तामिलनाडु के सेवाधारी आये हैं - अच्छा जो सेवाधारी आये हैं वह हाथ उठाओ। बंगाल, बिहार, नेपाल, आसाम, उड़ीसा, तामिलनाडु....तामिलनाडु की (रोज़ी बहन) आ गई है (रोज़ी बहन की तबियत काफी समय से ठीक नहीं थी) देखो नया जीवन मिल गया है। मुबारक हो नये जीवन की। एक हाथ की ताली बजाओ।

तो सभी ने जो भी पाण्डव वा शक्तियां आई हैं, सेवा के निमित्त बनी हैं, उनको सेवा का प्रत्यक्ष फल खुशी तो मिल ही गई है। बापदादा कहते हैं यह बच्चों की होशियारी है, सहज पुरूषार्थ में दुआयें लेने के लिए पुण्य का खाता जमा करने का यह चांस बहुत अच्छा ले लेते हैं और जो जितना अथक सेवा करते हैं, उस अथक सेवाधारी का मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों खाते में जमा होता है। इसलिए जमा करने की सभी सेवाधारियों को मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा। सभी पहुँच जाते हैं।

दादी जी, दादी जानकी से

एक टर्न मिस किया। सेवा की तो मिस नहीं किया। बापदादा आप दोनों के जिम्मेवारी के ताज में सदा ही अमूल्य रत्न लगाते रहते हैं। जितनाजितना जिम्मेवारियां साकार रूप में बढ़ती जाती हैं, उतनी आप डबल लाइट बन पार्ट बजाती हो। बापदादा को विशेष खुशी है कि शक्तियों ने विजय का झण्डा अच्छा बुलन्द किया है। बाप तो गुप्त रहे, लेकिन बच्चों ने प्रत्यक्ष रूप में झण्डा लहराया है। (दादी जानकी कह रही हैं बाबा एक आश है, शान्तिधाम जाने के पहले सब भारत में इकट्ठे हों) हो जायेगा, वह भी कहाँ जायेंगे, होना ही है। अच्छा।

डा.अब्दुल कलाम, डा.पिल्लई, डा.सेल्वामूर्ति भारत के साइंटिस्टों से

बापदादा आप सबका भाग्य देख हर्षित हो रहे हैं। आप आत्माओं द्वारा भी विशेष सेवा होनी है। कौन-सी सेवा करेंगे? (30 परसेन्ट लोग गरीब हैं, उसको दूर करने का संकल्प आ रहा है) हो जायेगी। आपका जो संकल्प है वह अभी समय आने वाला ही है, यह गरीबी रहनी ही नहीं है। जैसे भारत सबसे साहूकार था, वैसे ही अभी बनना ही है। तो आपका यह संकल्प पूरा होना है। अच्छा संकल्प है। कोई आत्मा सम्पर्क में आये तो आप सिर्फ मैसेन्जर बन यही मैसेज दो कि साइलेन्स और साइंस दोनों का बैलेन्स कैसे रहे, यह परमात्मा की ब्लैसिंग दिला देंगे। अभी यही मैसेज देना है। बापदादा को खुशी है, तो आप चाहते हो कि बच्चों में उन्नति हो, बच्चे योग्य बनें, उसका प्लैन भी यहाँ बना रहे हैं। एज्युकेशन डिपार्टमेंट में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं तो आप भी सहयोगी बन जायेंगे और यह सब बच्चे सहयोगी रहेंगे तो एक दिन आयेगा जो आप कहेंगे वाह भारत वाह! भारत की आध्यात्मिक नॉलेज सभी को सुख-शान्ति का वरदान देगी। (साइंस और साइलेन्स का बैलेन्स भारत को स्वार्णिम बनायेगा) फालो ब्रह्मा बाबा। आपमें एक विशेषता है, उस विशेषता को काम में ले सकते हो, आपकी विशेषता नेचुरल यह है कि जो काम करते हो, वह पूरा करते हो, अधूरा नहीं छोड़ते। इसीलिए इस विशेषता से आपका संकल्प पूरा हो जायेगा। यह दोनों साथी भी बहुत अच्छे हैं। त्रिमूर्ति हो गये ना! तो जहाँ त्रिमूर्ति है वहाँ शिव बाबा है ही है। (यह भी कुमार हैं) ब्रह्मचारी भी है, ब्रह्माचारी भी है। (भ्राता सेल्वामूर्ति जी से) अच्छा है, यह हेल्थ का कर रहे हैं। हेल्थ में भी देखो सभी का दु:ख दूर होता है ना! तो सबका दु:ख दूर करना, यह भी कितना अच्छा कार्य है। इसीलिए हेल्थ वालों को नेक्स्ट गॉड कहा जाता है। इसलिए अच्छा है। हेल्थ के साथ, ज्ञान की वेल्थ भी मिल जायेगी आत्माओं को। अच्छी - निमित्त आत्मायें हो।

(डा. पिल्लई को पदम श्री का टाइटल मिला है और डा. अब्दुल कलाम जी को भारत रत्न का मिला है)

बाप तो पदमा, पदमा, पदमापति का टाइटल देते हैं। इनको भारत रत्न का टाइटल मिला है इसलिए भारत से प्यार है। अच्छा - अभी माइक बनेंगे। रूहानी माइक बनकर सेवा करेंगे।

आशा बहन से - अच्छा चल रहा है ना। सभी की दुआयें हैं। दुआयें ऐसी चीज़ हैं जो हर कार्य सहज कर देती हैं। अच्छा है।

रोज़ी बहन से - कितना अच्छा पार्ट आपका ड्रामा में है। यह भी हिसाब पूरा हुआ। जो हिसाब रहा हुआ था, वह पूरा किया। खुशी-खुशी से पूरा किया। यह हिसाब तो होता ही है सेवा के लिए। जो सेवाधारी हैं ना वह कहाँ 65 भी जायेंगे सेवा के बिना तो रह नहीं सकते और वह सेवा का फल दुआयें मिलती हैं। अच्छा है। (साथ में डा. भी आये हैं) बहुत अच्छा किया। ब्राह्मण आत्माओं की सेवा करने से दुआयें हैं। खुशी-खुशी से सेवा की, इसलिए सेवा का जमा हो गया।

मद्रास की टीचर्स से - यह सेवा सम्भाल रही हैं। अच्छा है, सेवा का चांस मिलना यह भी भाग्य की निशानी है तो सब भाग्यवान हो।

विदेश की बड़ी बहनों से - बापदादा को विशेष खुशी होती है कि हर एक अपना-अपना अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। हर एक अपना-अपना पार्ट बजाते स्वयं को भी आगे बढ़ा रहे हैं और सेवा को भी आगे बढ़ा रहे हैं। ड्रामानुसार निमित्त बने। अभी आगे भी प्लैन बनायेंगे ना! क्या करना है। कोई नवीनता करेंगे ना! अच्छा बापदादा खुश है|